प्रकाशक
वीरेन्द्र कुमार सक्सेना बी. ए., साहित्यरत्न
नवयुग ग्रन्थ कुटीर
बीकानेर

प्रथम संस्करण

मुद्रक
शेखरचन्द्र सक्सेना साहित्यरत्न
एज्यूकेशनल प्रेस, बीकानेर

अपनी बात

रामदूत की पूरी रचना कर चुकने के पश्चात् भी हृदय मे सतोष नहीं है कि मैं श्री हनुमान जी का चरित्र--चित्रण पूर्ण रूप से कर सका हूँ। जो कल्पना करीब ग्यारह वर्षों से मेरे मानस को उद्वेलित कर रही थी और जो संकल्प मुझे बार बार प्रेरित कर रहा था उन तकाजों के बावजूद भी बिना हनुमत-कृपा के मै कुछ भी नही कर सका। विचार उठते और मिट जाते, पक्तिया बनतीं और बिगड़ जातीं। लगभग नौ साल तक तो संयोग मिला ही नहीं और मैं अपनी भावनाओं को लिए यों ही पड़ा रहा।

सन् १९५३ मे जब मुझे बीदासर मे रहने का मौका मिला तो वहा किसी अज्ञात प्रेरणा और भगवान राम की कृपा से इस काव्य का प्रारभ हुआ। मैं पाच सर्ग पूरे कर ही नहीं पाया था कि कुछ जयचन्दी बाधा उत्पन्न हो गई और मुझे डूंगरगढ आ जाना पड़ा। वहा दो साल तक रहा किन्तु निरतर कुछ न कुछ संघर्ष बने रहने के कारण समय समय पर प्रयत्न करते रहने पर भी दो सर्ग से अधिक नहीं लिख पाया। गजसिंहपुर में आकर मैंने पन्द्रह दिनों में ही सारे काव्य की रचना कर डाली। इस तरह आज ग्यारह साल की भावना को फलित होते देख कर मुझे

प्रसन्नता है कि आखिर श्री हनुमान जी महाराज की कृपा से उनका शृङ्खलामय वर्णन पूर्ण कर सकने में समर्थ तो हो सका।

इस काव्य की रचना में मुझे श्री शिवकुमार शुक्ल, श्री हरिप्रसाद मोहता, श्री प्रकाशचन्द गंगवाल, श्री कल्पानचन्द जैन, श्री जगमोहनदास मूंधड़ा एवं श्री पूनमचन्द सूटवाल आदि अनेक व्यक्तियों का समय समय पर सहयोग मिला है। अत उनका धन्यवाद कर देना उचित समझता हूँ।

भारत की सभी जातियों, वर्गों एवं प्रान्तो में श्री हनुमान जी की मान्यता प्रचुर परिमाण मे है। उनका व्यक्तित्व भगवान राम की सेवा से निखर कर मांगलिक बन गया है। त्रेतायुग मे सब कुछ होते हुए भी वे कुछ नहीं बन कर रहे। यही उनकी पूजा का रहस्य है। वैसे तो वे विद्वान, बुद्धिमान, बलवान, राजनीतिज्ञ, व्यवहारकुशल और प्रतिभा-सम्पन्न थे और यदि वे चाहते तो स्वय उस युग के नायक बन सकते थे किन्तु उन्होने ऐसा नहीं कर अपनी सारी विशेषताओं का उपयोग अपने लिए नहीं कर भगवान राम के लिए किया, इसी बात ने उनको अमर बना दिया।

वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस में उनके संबंध में जो चमत्कारपूर्ण एवं अकल्पनीय प्रासंगिक वर्णन आते हैं उनके विषय में कल्याण के यशस्वी सम्पादक श्री हनुमान प्रसाद जी पोद्दार के निम्न विचार जान लेने के पश्चात् किसी भी भारतीय के हृदय में संदेह की कोई गुंजायश ही नहीं रह जाती।

मेरा समाधान करते हुए आपने ता० ३-१-५६ के पत्र द्वारा बताया कि "श्री हनुमान जी वानर जाति के अवश्य थे पर वे वानर आज के बन्दर नहीं थे। इस वानर जाति की पूंछ का वर्णन सभी रामायणों में प्राप्त होता है। अतएव ऐसा विश्वास होता है कि पूंछ वाली यह कोई मनुष्य जाति थी और यह पूंछ उनके जन्मजात थी। रामायणकालीन पात्रों में इनका व्यक्तित्व रामसेवा का मूर्तिमान स्वरूप है और बड़ा ऊंचा है। रामायण मे वर्णित चमत्कारी घटनाएं कोरी कवि कल्पनाएं नहीं अपितु सर्वथा सत्य है। वानर रूप धारी देवों के द्वारा चमत्कारी घटनाओं का होना कोई आश्चर्य की बात नहीं है। श्री हनुमान जी महाराज बाल ब्रह्मचारी थे। मकरध्वज का जन्म तो उनके पसीने की एक बूंद से समुद्र स्थित मकरी के गर्भ से हुआ था। अमैथुनी और बिन्दुपात रहित मानसी संतति का वर्णन हमारे ग्रंथों में है और वह युक्ति संगत है।"

श्री हनुमान जी का चरित्र अनन्त और विशाल है। मैं तो इस काव्य मे मोटे रूप से उसका आंशिक दिग्दर्शन मात्र ही करा सका हूं। मैं उनके इतस्तत बिखरे हुए चित्रण को शृङ्खलाबद्ध कर आपकी सेवा में भेंट कर रहा हूं। आपको यह पसंद आए या न आए किन्तु मैं भगवान राम और श्री हनुमान जी की पूर्ण अनुकम्पा समझता हूं जिनकी कृपा से यह रचना मेरे जैसे अकिञ्चन

प्राणी द्वारा पूरी हो सकी। आप लोगों ने इसे अपना कर यदि मुझे प्रेरणा दी तो निश्चय ही भविष्य में कुछ और सेवा कर सकूंगा।

व्यास कुटीर

लाडनूं (राजस्थान)



पूज्य पिताजी पं० नानूराम जी व्य

के

कर कमलों में

सादर समर्पित

विषय-सूची



रा
म
दू
त

राजस्थानी कथा काव्य

खम्मा खम्मा

क्रोड़ क्रोड़ कण्ठां सूं निकसी
खम्मा खम्मा राम धणी।
जुग पलट्या पिण चाल रयी है
थांरी गाथा आज तणी
धरती कदे न जायो जासी
भारतमाता भली जणी।

इसो नखतरी हुयो न हुसी
खम्मा खम्मा राम धणी

सांस सांस में राम रमै है
हिव में चस री हिरकणी
जगमग जगमग देस, जगी है
राम नांव री दीप मणी

कदे अंधेरो हुयो न हुसी
खम्मा खम्मा राम धणी

नैति नैति कह वेद पुराण
थांरी लीला कथी घणी
बालमीक रामायण लिखग्या
फेरूं तुलसीदास भणी।

कदे पार पायो नीं पासी
खम्मा खम्मा राम धणी।

आ जिनगानी बीती जावे
थांरी सेवा नहीं बणी
सब भगतां नै दिखो चानणो
म्हारी बिरियां कियां टणी।

रामदूत नै पार लगासी
खम्मा खम्मा राम धणी।

क्रोड़ क्रोड़ कण्ठां सूं निकसी
खम्मा खम्मा राम धणी।



घोटो

घोटो हूँ मैं घोटो हूँ
उण लाल लंगोटे वाळै रो
सोटो हूं मैं सोटो हूं
ब्रमचारी बजरंग वालै रो

रामदूत री मुट्ठी रो हथियार
निरालो घोटो हूं
छोटो हूं छाती पर पड़ सब
रगत चूंस ल्यूं खोटो हूं।

जे पड़ जाऊं माथै पर तो
काळ-कपाळी खुल जावै
दग-दग दग-दग वहै पनाळा
गात रगत में धुल जावै।

नसड़ी री नाडी नै तोड़ूं
फोड़ूं गोडा दुसमण रा
जूँझ पड़ूं जद जुद्ध सांयनै
छोड़ूं प्राण नहीं किण रा।

समदर ऊफण हबोळा खावै
धग धग धरती डोल रयी
चरमर आभो डगडग डूंगर
नदियां आगी घोळ रयी।

लाखां मांय कदे नीं चुकूं
उठतां ही ब्रिरमांड हिलै
अकड़ू तकड़ू टूटटूट काकर
ज्यूं मांटी माय मिलै।

उतर खवें मुट्ठी मे जाऊ
कड़ कड बिजळी कड़क पड़े
खप्पर खाली लियां भैरवी
भूं भूं करती भड़क पड़ै।

अड़ जाऊं जे हौळै सी तो
फड़ फड़ जिवड़ो फड़क पड़ै
डील दवाद्यूं थोड़ो सी तो
तगरे दांई तड़क पड़ै ।

म्हारे विना भळै हणमत री
सगळी धाक अधूरी है
दुसमण दळ रा हिवड़ा हालण
हाळी हाक अधूरी है ।

रामदूत रो जीवण साथी
दुख सुख आळो सोटो हूं
छोटो हूं पिण खोटो हूं
बजरंग बली रो घोटो हूं ।

राम लखण सूं मिलणै री आ पेली वेळा
धार बटुक रो रूप करया जगळ में मेळा
जाण राम सू भूत काळ री सगळी का'णी
दो दुखिया में मेळ करावण उमटी वाणी

पेलो सर्ग

कथा

इस सर्ग में उस स्थिति का वर्णन है जिसमें बाली के भय से सुग्रीव मय हनुमान जी के पहाड़ों में अपनी जिन्दगी बिता रहे थे। राम और लक्ष्मण को उधर आते देख कर सुग्रीव को सन्देह हुआ कि कहीं ये बाली के जासूस तो नहीं हैं। हनुमान जी बटुक का भेष बना कर उनका भेद लेने जाते हैं किन्तु उनको विपत्ति में पड़ा हुआ देख कर तथा सारा परिचय पाकर उनकी सुग्रीव से मित्रता करा देने हेतु वहा ले जाते हैं।

पेलो सर्ग

त्रेता रो इतिहास जिणमें
दसरथ जेड़ा वचन वीर
के राम सरीसा सत्यवीर
के लखण भरत सा धरमवीर
सतवती सीता नार
के जिणरै पगां मांय
झुकग्या धरती गिगनार
भळै बळग्या वे डूंगर
धरती फाटी पाप पाप धंसग्या सै अन्दर
छोळां चढग्यो
झाग उफणियो महासमंदर
गूंज उठ्या सै
गांव गली घर मदर मदर
त्रैता रो इतिहास
के जिणरै पन्नां माथै
हड़ड़ हसै कुण

राम भगौ कुण
अेक मानखो
भळै डोळ सूं लगै जिनावर
पगां ऊभ हाथां सूं खावै जावै वानर
कटट् कटट् कर दांत वजावै
घोट हाथ में लियां पा'ड़ रा बोळ गिरावै
गरजै ज्यूं बादळ घररावै
चालै तो धरती थररावै
तपसी जबरो
आठ सिद्ध नव निद्ध हरदम हाथां में राखै
कूटनीति में कुसळ हियै री वात पिछाणै
पवनपूत हणमान राम रो दास
जिवारी सगळी गाळी
पी पी राम नांव री प्याली
भगती भाव री करी रुखाळी
घणां आंतरा
दोय तापसी सांवळ गोरा

आंवत जोया गुफा मांयनै जुड़ी कचेड़ी
मोर टहूक्या टमरक टूं कर उठी कमेड़ी

बाली रा जासूस भळै बण आया मोडा
टिकणो दोरो अबै लगासी खोजूँ गोडा

राज ताज रै साथ खोसली गांव लुगाई
लुक लुक जीवां चालै दोरी पेट भराई

धन माया सूँ छोड़ दियो जद सगळो लफरो
लारो पकड्यो मारण खोजूँ बाली जबरो

धरती आभै बीच रयो मैं अेकल हीणो
मरणो चोखो फिट फेफां री तरिया जीणो

सुणी भळै सुगरीव तणी जद बातां बेड़ी
चल्यो सत्रि हणमान भाव सूँ खाय भचेड़ी

राम लखण सूँ मिलणे री आ पेली वेळा
धार बटुक रो रूप कर्‌या जगळ मैं मेळा

खम्मा भळै बिरमा बिसनु उतर्‌या धरती माथै
बदर्‌या कास चांद सूरज साथै छियां तावड़ो

बाट भूल्या राजवी हो कास नांव वाजवी हो
कुमळाया था दीसो का खुसाय आया गांवड़ो

कास कोई काम सारू कास कठै मार खाई
वालो सूं सतायो सुगरीव जियां फिरै बापड़ो

रोई में भरूंट भाटा दरड़ा बाग्र मोकळा ई
कंवळा कूंपळ पगलिया ले पाछा घरै बावड़ो

मिलै जिसो दाळ दळियो पालर पाणी पीवा सारू
हाजर करसूं भळै पधारो कमी कोनी धान री

वूथे सारू काम करबा धरती आभो अेक करसूं
मोत रो जबाड़ो तोड़ूं सोगन म्हारा प्राण री

मांड नवों राज काज वैरी मार बदळो लेसूँ
धज्जा फरकाय देसूँ बीरा थांरी सान री

हियै में उमाव भरियो जाणे अड़ियो काम सरियो
बाघ जिसी काठी सुण वाणी हणुमान री

बोल्यो राम वीर थारी बातां है गंभीर
आपणो हियो मेल्यो चीर भीर म्हारे में घणेरी है

छोड्यो राज काज राख रघुकुल लाज
त्याग लाज रा सुख साज आज भायलो न बैरी है

खोई सीता नार बैठ्यो खोज खोज हार
हियो रोवै बार बार जाणै बावां बिच छेरी है

सूझै कोनी काम निसर्‌यो काया मां सूं राम
खाली ऊभा हाड चाम जियां राखोड़ी री ढेरी है

जोवण लागो राम भळै उद नाख निसांसा
कदे हियै मे आस छिणक में आय निरासा

जाण राम सूं भूत काळ री सगळी कोणी
दो दुखिया मे मेळ करावण उमटी वाणी

कही हनुमान मान लेवो बात म्हारी अर्जं
थारै जियां म्हारो राजा घणो दुखियारो है

नांव सुगरीव राज ताज वो खुभाय बेठो
पांख कटियो पंछी मानो टूट पड़ियो तारो है

वालो जाण वाली मारो पछै देखो माईचारो
दुनियां अेकै कानी फेंके इसो वीर खारो है

चाकरी में चूकै कोनी सत्ता मांय सोवै कोनी
आखी धरती माथे फेर सारो राज थांरो है

बोल्यो राम राजसुख लारै छोड़ आगै आयो
जे'र भरियो कचोळो मैं होटां को लगाऊंनीं

ताज तणी ठीकरी नै हार रतनाऊ जाण
कंठ फांसी खाऊँ कोनी ठगी सूं ठगाऊंनीं

कामणगारी बातां सुण गरबीज्योड़ी गाथा गुण
सत्ता सारू माया ममता हियै को जगाऊंनीं

शिवारी रो रसतो रोक मळै वज्जरचूक ठोक
लाख लोभ भेळा हुआ जीव को डिगाऊंनीं

पीड़ री पिछाण जाण बाली री खिचाण जाण
वीर हणुमान थारो हुकम उठाऊँला

बिखरियोड़ा रेसी केक वेगा होसां अेकमेक
टेक पाळी धरम री धरा पे बिठाऊँला।

रीत रायतां रो जाळ मर्यादा में सबनै ढाळ
हिम्मत हार हूया बिना मौम ने सुधारू'ला।

लुच्चाई रो लोप बाट सच्चा रो थर्प ठाट
जनसेवा रो सांचो जुग सुर्ग सूँ उतारू'ला।

राम लखण ले साथ पवनसुत घणा कोडायो
डग डीगा धर चल्यो वेग सूँ गुफा सिधायो

सगळी बात जणाय धणी रो काम बणायो
त्रेता रो इतिहास पवनसुत नांव गिणायो



हिम्मत राखो राम पवनसुत बोल्यो वाणी
किम्मत रोया नाय मिलै कद सिय कल्याणी
सोदूँ जाय पताळ कुद्द समदर मथ गेरूँ
खोदूँ जड़ ब्रिरमाड उलट थावर नै टेरूँ
जद आवैलो चैण मात रा दरसण पाऊँ
राम धणी सूँ वेग सिया नै लाय मिलाऊँ

दूजो सर्ग

कथा

इस सर्ग में राज्य प्राप्ति के पश्चात् जब सुग्रीव राम कार्य को भूल जाते हैं तब हनुमानजी उन्हें याद दिलाते हैं और वानरों की सेना के साथ राम के पास पहुँचते हैं। राम द्वारा दी हुई मूँदड़ी लेकर वे सीता की खोज में निकल पड़ते हैं।

दूजो सर्ग

वीत चल्या दिन केक राम रो काम भुलायो
रगरेली में मस्त राज रो ढोल घुरायो
कूक कुरभाड्यां करै किलोलां बोलै पछी प्यारा
किष्किधा रो राज महल में भूमै राणी तारा

काम अलूंजै दिनड़ो वीतै पीय कसुंबो रातां
चार महीनां वीत्या जाणै घड़ीक लागी जातां
सत्तामद में जावक ई जद निज करतव बिसरायो
मंत्री श्री हणुमान रीस कर कड़वा वैण सुणांयो

खमा राज रे काज पर मनै मोकळो खेद
काम सर्‌या दुख विसर्‌या वैरी हुयग्या वैद
भळै याद क्यूँ आवैली वे रातां काळी
नींद मांय ओभकता जाणै आयो वाली

मितरता रो नांव लजायो असली मरम भुलायो
वेगो परचो दीनो बीरा तनै काळ बुलायो

खमा खमा हणुमान उच्चार्‌यो पगां झुकायो माथो
महलां भगदड़ मची छोड़ आयो राणी त्रिप साथो
पड़ी चाकरी चूक घणयां पिण बगसो माफी
सोया सिघजगावण नै बस इतरो काफी

राम क्रिपा सूँ काम सरण री आई आछी वेळा
किष्किधा में लाग्या सामैं जोवो फौजी मेळा
कर राजी यूँ लाल लखण नै जुड्या राम रै नेड़ा
कोड़ां में सूँ टाळ पवनसुत हुया रामजी छेड़ा

सरवर खाय हबोळ डूँगरां मोर टहूकै
फर फर पून भबोळ रूँखड़ा चिड़ा चहूकै

झर झर झरणां झरै कबूतर करै किलोलां
टर टर मींडक डेडर तीतर भरै हिलोलां
मर बाथां मे रुंख रुंख सूँ लिपटी वेलां
हुयगी लूमाभूम कोड में किवरी फैलां

लख टोखी रै साथ घावळी कियां लटूमै
पड़ प्रीतम रै हाथ जियां घण मूँढो चूमै
कंचन किरणां भाकर माथै ऐड़ी छितरी
कुँ कुँ काची कामण जाणै महलां इतरी

कुतर कुतर चट चरै घास हिरण्यां रा टोळा
भरै चोकड़ी कदे फिरै वे होळा होळा
फूल्या किंकर कैर बंधी है बानरवाळां
नदियां समदर मांय चली चटका कर पाळां

बादळ बिजळी रमै रमै लहरां सूँ पाणी
चांद चांदणी रमै पीड़ म्हारी कुण जाणी

बोलै मीठा बोल पपैया कोयल सुवा
मनै सुणीजै रोळ ओपरा हूवा हूवा
बंद राम रा बोल हुई आंखड़ल्यां आली
हेटी घाली ढूँढ निहारै धरती खाली

आकळ वाकळ जियो हियै में उठ हिलोरा
कदे साफ मैदान कदे जम जावै धोरा

करणो मन्नै काम कोड सूँ राम धणी रो
झाग उफणतो तोड़ूँ जहरी दांत फणी रो
लड़ूँ बाघ सूँ झूँझ भिड़ूँ भाकर सूँ बाथाँ
पकड़ खिंवती बीज बीज ज्यूँ मसळूँ हाथाँ
साठै दाई चूँस फैंक द्यूँ जग रो मरणो
राम धणी रो काम कोड सूँ मन्नै करणो

ती जो स र्ग

कथा

इस सर्ग में सीताजी की खोज करने के लिए वानरों का दल रवाना होता है। सपाति द्वारा जब उनको यह मालूम हो जाता है कि सीता लका में हैं जो समुद्र पार थी, वहाँ जाने की हिम्मत किस को हो। सब अथाह समुद्र को गर्जना करते हुए देख कर हतप्रभ हो जाते हैं। जामवत इस कार्य को करने के लिए हनुमान जी को प्रेरणा देते हैं। उनसे उत्साह पाकर तथा अपनी विगत स्मृतियों को याद कर वे समुद्र पार करने को तैयार हो जाते हैं।

तीजो सर्ग

रूंखां रूंखां जाय खोजिया पत्ता पत्ता
गुफा गुफा में हेला पाड्या माता सीता

जाणक ई भणकार पड़ी ना घणां फिड़ीज्या
जीवणजोगा रया नहीं चितराम बिड़ीज्या

होटां फेफी हियै ऊमीज्या तीसा भूखा
पत्ता पत्ता जाय खोजिया रूंखां रूंखां

कांई करल्यां सोच करै सै हुय कर भेळा
चवै आंख सूं सरर अरर आंसूं रा रेळा

खोजी च्यारू कूंट मिली ना सीता माई
भटक भटक कर थक्या मौत अणचिती आई

लाख ओळमा त्यार भार जिनगानी मांई
भेळा हुय कर सोच करे से करल्यां कांई

डूबो समदर चाल भळे बिरथा है जीणो
फिट गादड़ री जूण जीवणो जग में हीणो

धरती धोमां मरे बांझ क्यूं रही न मावां
मारग छोड़ पताळ जींवता हेटैं आवां

नाख निसांसा हुयग्यो नेता अगद ऊबो
जीणो बिरथा भळै चाल समदर में डूबो

दाणांपाणी जाण गीधड़ो लायो नेड़ो
जमपुर रो बारट मोत रो सायो तेड़ो

पांख कट्यो बेडोळ गीधड़ो नांव संपाती
फड़ फड़ खड़ खड़ आयो जूं आंधी रेवाती

पवनपूत सूं सुणी जटायू बध री कोणी
नेड़ो आयो जाण गीधड़ो दाणांपाणी

सुणी सिया री बात चुरा जद लेग्यो रावण
गीध जटायू मात सिया नै लाग्यो छुड़ावण

लथपथ हुयग्यो पड्यो रगत में पांख पसार्‌यो
राम पगां में आंख मीचकर सुरग सिधार्‌यो

कद लावेला भळै पगलिया इन्नै रामधणी
जद रावण लेग्यो चुरा सिया री बात सुणी

बोल्यो समदर पार बसी है लंका नगरी
कंचन महलां माथ गडी है आख्यां जग री

रावण रो रहवास सिया सूं खासा अळगो
सामो दीसै राज लंक रो गेड्या रळगो

तळछै सीता मात बाग में जाकर जोल्यो
समदर पार बसी है लंका नगरी बोल्यो

झोळा चढियो कुद्ध समदर सामै जोयो
अंगद चारूमेर सैंग रा मूंढा टोयो

सगळां काढी जीभ फाटगी बज्जर छाती
जामवंत ललकार कही कर आंख्यां राती

मैं कर जाती पार करूँ के आया धोळा
सामै जोयो क्रुद्ध समदर चढियो छोळां

फाकी पावरा लग्यो पवनसुत नै कर राजी
खमा वीर हणुमान लगादे दिल री बाजी

तूँ बजरंगी बजरबूक सूँ समदर ज्यां थपेड़ै
भींत जाद सूँ न्हाड़ कबूतर मिनकी जियां मरोड़ै

बालपणै री हाल याद है जब्बर झांकी
लग्यो पवनसुत नै राजी कर पावरा फाकी

बालपणै में करी तपस्या ऐड़ी जबरी
आई सिध्यां आठ हाथ में विद्या वन-री

मंतर तंतर टोटक लोपक तिरणो उडणो
हक्को मारी डील बधाणो आगी कढणो

लख राघा रो बळ आयो थां अेक जणै में
ऐड़ी जबरी करी तपस्या बालपणै मे

रामधणी री घणी मेर है थांरै माथै
काम बण्योनीं दिनड़ा मागै खाथै खाथै

म्हां सगळां री थारै हाथ जिवारी बीरा
सीता री सुध सुदियां ल्या जा समदर तीरा

धन धन अजनि माय पूत हणुमान जणी री
थारै माथै घणी मे'र है राम धणी री

किलकारी दे पवनपूत निज डील फुलायो
पुच्छफांस नै फेंक हाथ सूं घोट घुमायो

जाण बूझतो जामवत री बात ठगायो
राम राम कह रामधणी रो ध्यान लगायो

बोल्यो समदर पार हुण री कर तैयारी
पवनपूत निज डील फुलायो दे किलकारी

रामदूत

ल्याऊं सुदियां खबर खोज सीता माई री
जाऊं परलै पार हियै खुसियां भर आई री

अेकल सांसा उडूं कठी ना छिण भर ठेरूं
डांव पड़ै तो हेटै आ लहरां पर तेरूं

ऊंडो उतर अथाग सेस सूं मैं भिड़ जाऊं
खोज खबर सीता माई री सुदियां ल्याऊं

आखी उम्मर गालूं हीड़ो करतो करतो
उलट पछाडूं भोत राम हित मरतो मरतो

जोऊं जद मैं थां लोगां नै इयां डबकतां
पार करूंला सात समदर पलक झपकतां

पिण पण सांचो चांद सूरज है म्हारी साखी
करतो करतो हीड़ो गालूं उम्मर आखी

करणो मन्नै काम कोड सूं रामधणी रो
झाग उफणतो तोडूं जहरी दांत फणी रो

लङ्कू बाघ सूं भूं भिङ्कू भाकर सूं बाथां
पकड़ खींचतो बीज बीज ज्यूं मसलूं हाथां

सांठै दांई चूस फेंक दूयूं जग रो मरणो
रामधणी रो काम कोड सूं मन्नै करणो

बैठा सागी ठोड़ भायलां मनै उडीको
इब कूकर री तरियां बैठा कूकर फीको

लंका नगरी जीतण री थे फेरो माळा
आऊ हाथोहाथ इसा थे चालो चाळा

वेळा बीतै आवण मे तो रहजो सैठा
मनै उडीको ठोड़ भायला सागी बैठा

याद दिरायो जामवंत बळ मन्नै म्हारो
मैं थूथियोड़ो बैठो जू तुमड्यो'रो भारो

बालपणै में मार फदाकी फाड्या धाको
करी साधना बरसां ताईं मचियो हाको

डांव न पड़ियो इण कारण सो बळ बिसरायो
जामवंत वळ मन्नै म्हारो याद दिरायो

घण आसीसां साथ भायलां करो विदाकी
दूध लजाऊं नहीं कूख नीं अजनी मां की

याद रवैला जामवंत रा बोल सुहाणा
के तो मोसां मरु के खाऊं माघ मखाणां

रामधणी रो काम करण री चालै चीसां
करो विदाकी साथ भायलां घण आसीसां

ल्होड़ो रूप बणायो डोल हवा सूं हळको
पळको पड़ियो आख्यां में बळबळती झळको

पुच्छफांस नै काळी नागण ज्यूं फटकारी
घोट घुमाय जोर सूं दी किलकारी

कथा

इस सर्ग में हनुमान जी द्वारा समुद्र पार करने का वर्णन है। वे उस समय बहुत सुन्दर लगते हैं। रास्ते में थक जाने के बावजूद तथा मैनाक पर्वत की रमणीयता से आकृष्ट होकर भी राम-काम किए बिना वे विश्राम लेना पसन्द नहीं करते। सुरसा द्वारा ली जाने वाली परीक्षा में उत्तीर्ण होकर वे ज्योंही आगे बढ़ते हैं कि सिंहिका से उनकी फिर भिड़ंत हो जाती है। उसको भी समाप्त कर वे अपने उद्देश्य में सफल होकर लंका पहुँच जाते हैं।

चोथो सर्ग

जोय समदर थावर तरियां होय रिसाणो लंका नाकी
दांत घसीट्या कई कई कर डाकी री नरियां दी दाकी
धर धर धर धर धूजी धरनी बांकी जोय जुझारू झांकी
डगमग डूंगर डोलण लागा रामदूत जद भरी फुदाकी

श्री हणुमान उड्यो जद जोयनै वेग उणांरो हारिल हारो
गरजण लागी दस् दिसावां घड घड़ घड घड़ जियां नगारो
खाय रगड़का चटकण लागी फूट सिलावां जियां तगारो
शिखरी आभै मांझ मडी यूं टूट वगै ज्यूं पुंछ्ळ तारो

श्री हणुमान उच्चारै होटां राम राम का संभो संभो
भळ भळ डील मळाका मारै पळकै ज्यूं सोनै रो थमो
शब्द कोष रो आखर संपंनपाट हुयो उड़ रयो असंभो
दोय दोय सूरज जोय गगन विच जीव जिनावर कियो अचभो

गुणचालीस

तिल धरवा नै अणी जगां नीं भाकर जड़गी ज्यूं चिरमोली
भारत मां री कास लिलाड़ी माथै चरचो चदण रोळी
उड़ै धमाकां लाल गुलाल अबीर भरी फटकी जिमि झोळी
ऊपर अम्बर तळै समंदर बिच हणुमान फबै जिमि ढोळी

डूंगर पग सूं चूर हुवै का धरती फाटै जाय पताळां
समन्दर सगळा होग रिसाणां गरजै भू आभो गिट राळां
बादळ बिजळी रै चंग माथै गाजै गावै लूर धमाळां
रामदूत रै तन सूं उफणै नागण सी बळबन्ती झाळां

चढतां उड़तां ताळ हुई जद तन में आई रंच थकावट
ढीली चाल आंतरै लंका पिण पुगणो है सोची छेवट
मन्नै करणो काम धणी रो हियै सांच है नहीं बणावट
होट उच्चारै राम राम सिय राम पगां में लगी लगावट

फळ फूलां सूं लड़ाझूम भाकर मेनाक दरसियो सामी
डील थक्यो परिहार यां गावै स्वागत रारू ली भर हामी
जोत जगी मन में ओजूं यूं काट लगाऊं कूकर खामी
काम धणी रो कर्‌यां बिना बिसराम करै बो लूण हरामी

रा० दू० ४

भळ भूखो हूँ और तिसायो पिण इमरत रो कोड करूं नीं
इदर आळो ताज मिलै तो भी ललचाऊं कदे डिगूं नीं
दुनियां रा सगळा आकर्सण म्हारो मारग रोक सकै नीं
मात सिया रै दरसण बिन बिसराम कठै मैं पलक भपूं नीं

पाच पांवड़ा वगियो रसतो रोक खड़ी आ सुरसा सपणी
जीव अमूझ्यो जाणै ढकदी सबड़क हांडी माथै ढकणी
रामदूत नै लगी डरावण डाकण ज्यूं टावर नै भपणी
धरती अबर धर धर धूजै लख बाघा सी गाज गरजणी

चांद-सुरज कजळाया दोनूं ज्यूं सावण री रात अमावस
रामदूत पिण कदे न कांप्यो करडी छाती राखी थावस
सुरसा यूं बाको लपकायो ज्यूं कठा हणुमत जासी फस
देवगणां री भेजी आई बळ बुध नापण री मन में बस

मात सिया नै मुंदड़ी देकर पाछो आवण दे महतारी
थांरी मान मनोती करसू अरज अती बस सुणलै म्हारी
पिण नीं मानी अट्टहास कर अजगर री तरियां फुफकारी
रामदूत रै बळ बुध आगै छेवट तो हारी पिण हारी

दरसण पेलां पड़सी केई रामदूत नै पापड़ वंटणां
जैरीला आंसू लोही रा वेड़ा पिण गटगोळा गिटणां
हियै चानणो लगन चकोरी राम राम जिय रसना रटणां
रामदूत रै रसतै विचला रोड़ा कुत्तर दाई कटणां

ज्यूं ज्यूं सुरसा वाको फाड़ै श्री हणुमान हुवै त्यूं दूणो
दोनूं उळझै गरजै गुड़कै ज्यूं चालै कूवै रो भूणो
नान्हो वण वाकै में धंसग्यो जोय मांयलो खूणो खूणो
रामदूत यूं निसर्यो पाछो ज्यूं सूरज उग जाय अगूणो

खमा खमा कह हूंढ झुकाई सुरसा साव पड़ी लजखाणी
तूं वजरंगी अजर अमर है लेय परीक्षा मैं आ जाणी
राम रटै नीं पाप कटै नीं वे आदम तैली री घाणी
पवनपूत तूं रामदूत है धन धन थारी आ जिनगाणी

श्री हणुमान चल्यो सुरसा सूं सामी पाकर मान मनावण
राम राम कह घोट घुमायो हाथ पगां नै लग्यो वधावण
मच्छड़ी नै जाळी में वैठ्यां माखी माळर मिलै लगावण
त्यूं समदर में ऊभ मिहका रामदूत नै लगी लिफावण

आभै उडता पकड़ पंखेरू मार उगाळै काठी छकणी
टॅटस हुयग्या नीं मुसकीजै पकड़ लियो या छायाभकणी
रामदूत नै छेड्यो जाणै नोळै सू भिड़ जावै सपणी
आज बापड़ी नै करणी है भळै काळ सूं कंठा लगणी

श्री हणुमान बिखेरी जाणै चोपड़ आळा गीर गट्टारी
दांतां सू आंतां यूं फाड़ी घाल काळजै जियां कटारी
गुकन हुया नभचारी सगळा फळ फूलां सूं झुकी घटारी
बाघ जियां गज मार लसै त्यूं रामदूत री फबी छटा री

जीत सिंहका सुरसा बगियो सिय सोदण में रही न संका
छण छण छोळां चढ़ै बढै बळ दूणो चीणो जाय न आंका
अट्टहास कर गरजै जाणै परकै करसी ओ बळयका
पार समंदर छोड्यो अंबर रामदूत जद जोई लंका



छेवट छोटो रूप बणायो लुक लुक आख अचाई
रात पड्या परकोटो फाद्यो पिण होगी पकड़ाई
कपड़ कठ रखवाळी रो जद श्री हणुमान मुळकतो
घूंखो सामो छाती पायो दियो भळै गळगोतो

पांचवों सर्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान जी लका में प्रवेश करते हैं । लंका नगरी को वे घूम घूम कर देख रहे हैं तथा प्रवेश के समय लंकिनी द्वारा पकडे जाने पर उसको पीट कर अन्दर घुस जाते हैं ।

पांचवों सर्ग

राती आंख्यां सामै जोई रावण आळी नगरी
जाणै धरती सुरग मिलायण आळी है आ डगरी

ऊंची आभै अड़ी भींतल्यां सोनै रो परकोटो
सांचै ढाळी जिणमें कोनी किणी चीज रो टोटो

चांदी तणी अटार्यां बिच बिच सोनै रो चिलकारो
परकोटै सूं खाय भचीड़ो वावड़ियो किलकारो

नीलम री चोक्यां मणियां री झुकी हवेल्यां प्यारी
जोय विस्वकरमा री जिणरै सामै कूंची हारी

जगमग जगमग लंक सजी यूं सोभा कही न जा री
ओढ चूनड़ी सोवै जाणै पदमण कामणगारी

घर घर बानरवाळ डागळां उडै पताकां फर फर
बाजै बाजा घणा सोवणा खुसियाली में भर भर

खळ खळ करता खळकै झरणा भाकर मां सू झर झर
बुटवड़ ताला करै किलोला मींडक बोलै टर टर

पौफाटी सू पौफाटी तक बजै पिलावड़ घड़ घड़
सख नगाड़ां री मिदरा मे घणी होयरी भड़ भड़

घर घर मे सगीत सुणीजै गावै वेद रिचावा
रागरागणी भात भांतरी छोड़ भळे कित जावां

जै सिव जै सिव होट उच्चारै सगळो लोग लुगाया
रवै रात दिन संकर री भगति में जोत जगाया

ले गरणांटी मींडा पाडा बकरा वैं वैं बरळा
अरड़ावै गळ जोय छुरी नै खाय मौतसूं तरळा

गुंडा जोरांमादी जुवती हाथां बीच दबोची
जियां कपोती नै सिकरो ऊंची री ऊंची बोची

रामदूत

ठोर ठुकिया जगां जगां मल कुसती लड़ै अखाड़ां
जाणै बाथां आया हाथी भाकर भळै उखाडां

ले ले गुटका दारू रा कई रात्यूं घूम्मर घालै
मुंडे बोलै बोल ओपरा ठेकै कानो चालै

हाथ लियां हतियार सिपाई खट्ट खट्ट कर चालै
जे मिल जावै काळ भळै वो फाड़ चील नै राळै

परकोटै रै चारू खानी रहै रात दिन पोरो
सोरै सांस मांयने धसणो लंका में घण दोरो

हियै उमड़िया गोट कियां लका नै राम जितैला
राकस वाको फाड़ बानरा गास्यै जियां गिटैला

बोट लोट अर सोट खोट री नीत न भळै चलैली
आंख्यां धूळ नाखणी ठगणी विद्या अठै फळैली

दोफारो चिलकारो टाळूं रात पड़ै जद पेसूं
नीं तो टेस गमासूं कोरो भळै टापतो रेसूं

गुणचाव

हिये निरासा जद आ जावै जाणो जीवत मरणो
जीतै जिणरो हियो म्हारै सीख्यो कदै न डरणो

छेवट छोटो रूप बणायो लुक लुक आंख बचाई
रात पड्यां परकोटो फाद्यो पिण होगी पकड़ाई

पकड़ लंकनी बोली मैं हूं लंका री रखवाली
चोर चकार धाड़वी चाबूं काचा मैं जबराळी

आंख बचाय घणो तू चाल्यो कर जबरी चालाकी
म्हारै सामै लाखांभखणी मौत बापड़ी थाकी

कपड़ कंठ रखवाळी रो जद श्री हणुमान मुळकतो
घूंसो सामी छाती पायो दियो मळै गळोतो

खाय गुळेची पड़ी जमीं पर आंख्यां चुंधी आई
बोली लंका नगरी थारी अबके ऊधी आई

आंख्यां फाटी मुंढे सर सर लोही बह्‌यो पनाळो
थर थर कांपी बोल्यो लंका नगरी रो करनाळो

खमा खमा हणुमान उच्चार्‌यो पगां झुकायो माथो
छोड़ लकणी नै मरतोड़ी घुस्यो लंक में खाथो

लुकतो छिपतो पूग रावळै सिय खोदण मे लागो
रामदूत लंका मे घुसनै राम काज में लागो



रामदूत हणुमान भायला थारी सीख पियारी
भळै राम रै चरणा में अरपण आ काया म्हारी
गद्‌गद् हूया सरीर दोनुवा घाल मिल्या गळबाथी
लंका रो इतिहास लिखैला रामदूत रो साथी

छठो सर्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान जी की कूटनीतिक चेतना का वर्णन है। वे लंका में पहुँच कर सीता की खोज करते हैं साथ ही रावण के भेदों का भी पता लगाने की कोशिश करते हैं। रावण एवं मदोदरी की बातों द्वारा उनको विभीषण के मतभेद का मालूम होता है। वे विभीषण से मिलकर उसको राम की तरफ मिला लेते हैं इस तरह विभीषण को अपना साथी बना कर हनुमान जी लंका में अपनी विजय हुई समझ लेते हैं।

छठो सर्ग

सावचेत हू सावधान मिनकी री तरियां पग ठावै
कारो जे पड़ जावै तो झट छांईमांई हू जावै

कठै उघाड़ी साव सुन्दर्‌यां सेजां में सिसकारै ही
कठै कमेती नागणियां बळ खावै ही फुफकारै ही

कठै मिनख री बाथां में मरवण यूं काठी लिपट्यां ही
मलयागिर रै चंदण सू ज्यूं नई नागणी चिपट्यां ही

जोय नजारा महलां रा बजरंगी मन में पिसतावै
आकळ बाकळ भणै राम फिर सोदण में लग जावै

जोय लंक री रसलीला पटराणी रे महलां पूगो
रावण नै वैठो जोयो यूं ज्यूं सोनै रो सूरज ऊगो

पन

तो सुणी अनीती माड़ी है समझावै ही यूं पटराणी
सुंदर सूं सुंदर घणी अठै जद चुरा सिया नै क्यूं ल्याणी

है सीख विभीषण री सांची काया रै काट लगाणी क्यूं
सीता-चिणगारी नै रखेल लंका रे आग लगाणी क्यूं

उण कायर कीट कपूत बन्धु री बात सुणूं अणखाणी क्यूं
मैं सावचेत हूं सावधान बोली रह प्रिय पटराणी तूं

तो त्याग महल री गलगल नै सिय नहीं देख हणमान टुर्‌यो
'भाई नै भाई सूं' तोड़ण-सरणाट विभीषण -भवन फुर्‌यो

लंका री कूंची हाथ लगी हिय में उच्छाव घणेरो हो
ही सांझळ रात मळै हणुमत री आंख्यां मांय सवेरो हो

कांटै सूं कांटो कढ्या करै विण जहर जहर कद बुझैला
रावण रा भेद विभीषण विण लंका में क्यूंकर सुळझैला

रावण, मैं थारी मौत लिखूं भ्रो राज विभीषण पावैला
लंका रो ताज नहीं ठहरै वैगो माथे सूं जावैला

रामदूत

मैं रामदूत हणुमान सिया नै सोद सोद कर हार चल्यो
बो राम के जिण सुग्रीव सू मिल बानर बाली रो प्राण दल्यो

बो राम के जिण री देवी नै रावण लंका में ले आयो
सीता रै मिस सूं मौत आपरी अपणै माथै धर लायो

जको विभीषण से भाई नै कायर कीट कपूत कहै
हरै लुगाई जको पराई बा'दुर सूर रापूत बणै

दिन ओथै जद मिनख मात्र नै सीखी लागै दोखी
सीख सुहाणी भूण्डी लागै चोखी लागै ओखी

कंचन री आ लंका नगरी निश्चै राख बणैली
तीन लोक तैतीस भुवन मे थांरी साख जमैली

कही विभीषण रामधणी कद म्हारी भीर चढैला
दुसमण रै सागी भाई रो कद पतियार करैला

राम रमै म्हारी रुं रुं में मैं लंका रो वासी,
जुग पलटैला लोग कहै घरभेदू सत्यानासी

छप्पन

रामदूत

चोखो है ओखो है राजा रावण म्हारो भाई
भीड़ पड़ै जद आडो आवै आखर लागी थाई

भाई जिसड़ो सेण जगत में हूयो न आगै होसी
भाई जिसड़ो दुसमण भी धरती माथै कद होसी

सांची है हड़हड़ कर हंसिया बोल्या श्रीहणवंता
जुलम ज्यादती कदे न सहसी आज जागती जनता

भळै छांट नै पकड़ मिनख गिननारां घूम सकै है
भळै फोग रै डांखळियां ज मतीरा लूम सकै है

पिण आ समव नहीं कै संकर खुद भी लेय बचाई
अटल सांच है लंकपती री निस्चै हूणी आई

बेहद जुलमी टिक्या न टिकसी बाली प्राण गमायो
खर दूसण त्रिसरा सा मरग्या कठै त्राण नहीं पायो

रामघणी री क्रिपा हुयां लंका रो राज मिलैला
ताज मिलैला तीन लोक में सुख रो साज मिलैला

सतानन

यमदूत

धरम बचावरा भाई क्या खुद नै भी होम सकै ओ
जुग जुग तांई जीवै मानखो काळ न मार सकै तो

और आप तो राम भगत हो सत नीति रा ग्याता
मात सिया रो पतो बताओ वेगी म्हारो भ्राता

जो लंका री उथळ पुथळ में घाल मिलै गळबाथी
निस्चै राम बणावैला उणनै सुख दुख रो साथी

राम राम कह उठ्यो विभीषण भारी अधड़ आयो
रावण पाप राम धरम रै बिच बिच गोता खायो

आसा और निरासा छाई सुख दुख सागै आयो
प्रभू चानणो कर हिवड़ै में भगत आज हफळायो

अेकै कानी जामणजायो जुलम अणू'ता ढावै
अेकै कानी राम जिणां रो नैति नैवि जस गावै

कचनतणी कटारी जिवडा छाती मे कुण खावै
इसड़ो कुण है जाण जहर रो प्यालो होट चढ़ावै

रामदूत हणुमान भायला थांरी सीख पियारी
भळै राम रै चरणां में अरपण आ काया म्हारी

गद्‌गद् हूया सरीर दोनुवां घाल मिल्या गळबाथी
लंका रो इतिहास लिखैला रामदूत रो साथी



छोटो जाण न कर संसो मैं दूत राम रो प्यारो
हिम्मत है पिण ले चलणै में सारो कोनी म्हारो
आयो खाली लेकर प्रभु रो मंगळमय सदेसो
ले आई तू सीता नै मा हुक्म नहीं है ऐसो

सातवों सर्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान अशोक वाटिका में सीता को तड़पते हुए देख कर मूंदड़ी डालते हैं। उन्हें अपना परिचय देकर सारी कहानी सुनाते हैं। फिर भूख लगने के कारण सीता से आदेश लेकर बाग उजाड़ डालते हैं और रावण के पुत्र अक्षय व रखवालों को मार देते हैं। मेघनाद उन्हें पकड़ने आता है।

सातवों सर्ग

राकसण्यां सू घिरी जानकी बैठी बैठी रोवै
ज्यूं आधै रै आगे कोई रो रो नैणा खोवै

रोवै बिलखै राम राम कह कुरजां ज्यूं कुरलावै
बार बार दे नूतो मांगै मौत न तूं क्यूं आवै

अम्बर कानी जोवै सीता तारा टूट पड़ोनी
आग उगलणो भाकर फाटो धरा धूम धसकोनी

रामदूत देखी सूंकेड़ी सागर सी जद सीता
माता रो कद कष्ट कटैलो हा रे वाम विधाता

जोय सोवणी वेळा हणुमत लपक मूंधड़ी फेंकी
राकसण्यां सै भगी जानकी रोती रोती चैकी

राम नांव री खास मूंदड़ी जाणी और पिछाणी
सीता संसै पड़ी बिलखती सी बोली यूं आणी

हाय मूंदड़ो आई कूंकर कूंकर रामधणी है
वन भटकतां दोन्यां रो गत कूंकर आज बणी है

थोडी वेळां पेली रावण वात सुणाग्यो खारी
रामधणी विण जीसूं कूकर वेमाता री मारी

धड़ कर छल्लो कास नयो ओ रावण तूत रचायो
जद यूं सोच कायरी छाई रामदूत प्रगटायो

झट बोल्यो रामदूत मैं हूं अजनी रो पूत
कोनी रावण रो ओ तूत माता मूंदड़ी मैं लायो हूं

वन में हरी गई जद नार दोनूं भाई हो बेजार
भटक्या फिर्‌या हिये न मार दुखिया सुग्रीव सूं मिलायो हूं

काढो दोन्यां रो कर मेळ स्याम वाली रो कर खेल
लीनी लंका री फिर गेल माता खोजतो मै आयो हूं

आयो समदर नै कर पार पहुंच्यो लंकपुरी रै द्वार
तारी लंकनी ने मार भगवन राम रो पठायो हूँ

माता दरसण री थी आस भागी नैणां री सा प्यास
अंखियां भरियो भळे उजास कोनी हियो हारणो

घलसी लंका में अब रास होसी लंकधणी रो नास
राम री मनसा है आ खास सीता वलकल धारणी

अनीतो करतो कोनी कास हूतो नहीं काळ रो गास
माता मत रह भळे उदास छिणक में उतरै भारणी

धणी रो हुकम नहीं तो दास मसळ लंका नै जाणै डांस
माता मगळ कारणी

रामजी करैक कोनी याद सुणेला कद म्हारी फरियाद
दरसण करियां पूरै साद सीता लागी पूछणी

लेग्यो रावण जद जबरीस धैर्य नै छोड भळे जगदीस
करी हैला लिछमण पै रीस कुटिया कूंकर छोडणी

राजी हैला दोन्यूं वीर म्हारो राख्यो हैला सीर
नीतर करस्यूं कांई जी'र पाछी लागी झूरणी

वानर सेना ने ले साथ आसी लंका कद रगुनाथ
धरसूं चरणां में जद माथ हुवेला मनसा पूरणी

वण है रामधणी बेचैण झर झर बवै रातदिन नैण
इक दिन लग्या ओल्मो देण सकट पावै जानकी

हणुमत खोज ठिकाणो वीर कह यूं हूया राम दिलगीर
मोकळी हिये प्रभू रे पीड़ परवा कोनी प्राण की

रामजी दियो संनेसो एक सैंठी रही न जाई ठेक
राखो सदा धरम री टेक इज्जत कुळ रै खाण की

चार दिन मात हियो मत हार करेला लंका नै प्रभु छार
उतारेला धरती रो भार लाग री दिन में आण की

छोटो जाण न कर ससो में दूत राम रो प्यारो
हिम्मत है पिण ले चलणे में सारो कोनी म्हारो

आयो खाली लेकर प्रभू रो मंगळमय संदेसो
ले आई तूं सीता नै मा हुकम नहीं है ऐसो

रामधणी री आग्या हो तो भी मैं चालूं कोनी
मिनख पराए सागै जा पतिधरम लजाऊं कोनी

दुनिया कहसी सीता वानरियै रै साथै भागी
क्यूं आई कह रामधणी भी रीसा बळसी सागी

दुख होसी उणरी बां'दुरी माथै लागसी रोळी
कहतां कहता हुई गळगळी भीगी सारी चोळी

बोली सुण कर घणी खुसी हूं राजी दोन्यूं भाई
राम रटती रहू रात दिन दुख नै भी बिसराई

बोल्यो हणुमत माता अब तो च्यार दिना री बाजी
राम मिलैला वेगा दिल में मत ना रवो बेराजी

सगळा भेद भगत सूं पाय कीनो रावण सूं अळगाय
दरसण किया वगां'चै आय माता आस पूरणी

फळां सूं लदिया दीसे पेड़ भळे क्यूं भूखो ज्यूं भचभेड़
इजाजत मिल्यां लगाऊं गेड़ सीता बात मानगी

फळां सूं धाप भर्‌यो जद पेट रूंखड़ा तोड्या पूंछ लपेट
रुखाळा प्राण बचाया लेट बाग में भगदड़ माचगी

अखय आयो उणरी फेंट हणुमत मारी एक चपेट
फाट कर भेजो पूग्यो ठेट सभा में बात पूंचगी

रावण करियो राता नैण सभा में लग्यो जोर सूं केण
मौत सूं करी भळै कुण सैण लगाई बाजी जान री

बेटा मेघनाद गुणवान आयो कुण इसड़ो बळवान
मसाणो बाग असोक मसाण राखी कोनी राज री

जिन्दो लाय पकड़ नै वीर रयो वो राकसदळ नै चीर
काळजे उठो हमारे पीर लंक में धमचक माचरी

काळ नै आयो दीसै नूत बिडार्‌या लंका रा केई पूत
कोई बानर है या भूत पकड़ नै करणी सान्तरी



महामिनख रो काम नहीं के लड़ै लुगाई खातर
और देश रै मिनखा री उडवावै कातर कातर
इंणी खुसी में खेलै जनता उणरी खाल खिंचावै
धरती री माटी मिनखा रै लोही सू सिंचवावै
अपणो अहं पाळबा खातर परजा नै पिसवावै
इसड़ो राजा इतिहासा में कुळ रै दाग लगावै

आ ठ वों स र्ग

काळ नै आयो दीसे नूत बिडार्‌या लंका रा केई पूत
कोई बानर है या भूत पकड़ नै करणी सान्तरी



महामिनख रो काम नहीं के लड़ै लुगाई खातर
और देश रै मिनखां री उडवावै कातर कातर
हंसी खुशी मे खेलै जनता उणरी खाल खिंचावै
धरती री माटी मिनखां रै लोही सूं सिंचवावै
अपणो अहं पाळबा खातर परजा नै पिसवावै
इसड़ो राजा इतिहासां में कुळ रै दाग लगावै

आठवों सर्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान जो मेघनाद द्वारा पकड़े जाकर रावण के सम्मुख ले जाए जाते हैं। रावण को वे राम से संधि करने की सलाह देते हैं किन्तु रावण उसे नहीं मान कर उल्टा बिगड़ उठता है और हनुमान जी का अंगभंग करने का आदेश दे देता है।

आठवों सर्ग

रावण रो उण राजसभा में बैठो यूं हलकारो
लंका रै आभै में चमक्यो चोटी आळो तारो

करै मोवणी वात भळै ज्यूं बोलै कामणगारो
पिण रावण नै खारो लागै रामधणी रो प्यारो

सांची है जद मौत मंडै तो इमरत लागै खारो
खटरस जैर सरीसो भावो माटी रो सो गारो

बोल्यो छोटै मूं सूं वातां चोखी कोनी केणी
पिण हिड़दे रै मांय पड़ी चावे कोनी देणी

यो उपदेश नहीं है राजा ना हूं पढियो लिखियो
रामधणी री किरपा सूं दो वातां खाली सिखियो

दूसोतर

रामदूत

मारो मारो सुणी लछमणी आग्या दी झट मारो
आय विभीषण कही सभा में मत मारो हलकारो

दूत न मारणजोग हुवे तो आ राजनीति बतळावै
जदी कुमाणस दूत हुवे तो दण्ड मोकळो पावै

रामदूत मन मन मे मुळकै सैन विभीषण कीनी
धन्य भायला मौत बीच तूं सुध बेगी ले लीनी

और सभासद कही सांच है दूत न मारण जोगू
अंग भंग कर काढो पाछो फूल हुया सै पोंगू

एक कहे नकटो कर काढो एक कहे कर आंधो
एक कहे का कान काटल्यो तोड़ो सांदो सांदो

अळगी अळगी राय सुणी पिण दाय एक नीं आई
नाक कान री बात भळै गवण रै मन नीं भाई

कानां बाती जोय डणांरी हणुमत बोल्यो फेरूं
हुकम हुवे तो हिव री बातां सभा मांय कह गेरूं

चोबदार

धरती माथै हुयो न हूसी जबरो रावण जेड़ो
काट काट कर माथो दीनो सिवसकर नै तेड़ो

राजनीति रो नाथ वीर वेदांगी पंडित अेड़ो
ग्यान और विग्यान मांयनै नहीं जिणांरो छेड़ो

अेक मिनख में दस माथां रो ग्यान कदे ना पायो
दुख तो है खाली इणरो ओ आज कूड़ भरमायो

जको लंक री बहबूदी खातर निज रगत बहायो
बडी बडी दुसमण री सेना दुरग मोकळा ढायो

जको प्रजा रै दुख सूं तळ कर आंसूड़ा ढळकायो
सुख में मुळक मुळक होटां से इमरत सो पळकायो

और जको मंदोदर सी महलां पाई पटराणी
जिण आगे सीता सी लाखां भरै लुगायां पाणी

दुख है दुखियारै राजा री छळ सूं चोरी राणी
कांणी रहगी है धरती पर जागी है जिन्दगानी

महामिनख रो काम नहीं के लड़ै लुगाई खातर
और देस रै मिनखा री उड़वावै कातर कातर

हसी खुसी में खेलै जनता वणारी खाल खिंचावै
धरती री माटी मिनखां रै लोही सूं सिंचवावै

अपणो अह् पाळणा खातर परजा नै पिसवावै
इसड़ो राजा इतिहासां में कुळ रै दाग लगावै

और आपसो जबरो राजा हुयो न आगै होसी
सीता देकर संधि करल्यो राम बणो संतोसी

दोनूं मिलकर एक बणो भूमंडल थरवैला
तीन लोक तैंतीस भुवन में थांरी धाक जमैला

किण सूं संधि करूं राम तो एक फूंक रो खाली
छत्र महीनां तक दव्यो खाख में याद नहीं क्या वाली

राम मार कर आयो वणनै एक बाण में खाली
चुप वानर आगीना मूं में बात इसी मत घाली

मैं कैलास उठायो धर धर धर धर धरती धूजी
मांड सकै म्हारै सामै पग सगति कोनी दूजी

लंका म्हारी परजा म्हारी थारी चाल चलै ना
वहका चायै कितरो ही तू थारो जाळ छळै ना

जको लुगाई लियां साथ में रोही फिरै भटकतो
ढाब सक्यो नहीं मात केकैई भाग्यो ताज पटकतो

लुक कर बाली मारयो तारा सुग्रीव नै समळाई
मण सूं तू मिळणै री कै थारो क्यूं हूणी आई

सूरपणखां री नाक वतावै राम लखण री वातां
सीता रै लारै वे निस्चै प्राण गमासी हाथां

जाण जानकी लंका री तू म्हारै दिल री राणी
रामभळै अब हिव वहलासी सुण सुण उणरी का'णी

यस बानर जदी आगै बोल्यो जीभ खींच काढूंला
राजनीति से धरम त्याग थारा दो टूक करूंला

हणुमत सोची मनमें जिवड़ा ओ मानै नी थारी
लङ्का री परजा पर निस्चै मौत मचाई ध्यारी

पावण दे पावण री मनसा इण नैं ओकर फोड़ो
चालण दे लङ्का पर परभू काळभळी रो कोड़ो

ओ मानै नी लाखां ही क्यू सीख सुणावै कूड़ी
नीत बदळगी बुद्धि फिरगी पड़ी घास री तूड़ी

कही विभीषण चुप हलकारा फेर बोलणो माड़ो
बड़ा बड़ा मिनखां रो भड़्यो रावण आगै आड़ो

हणुमत और विभीषण रो चुप चुप चौनजरा होली
हेठो घाली ढूंढ जीभ नै दांतां बीच लकोली

रावण बोल्यो आखर बानर जात कुजात कहीजै
प्यारी पूंछ बिना धरती पर इण सूं नहीं रहीजै

पूंछ जळावो अंगभंग कर वेगो बारै काढो
धणी करै तो नाक कान भी बानरियै रा बाढो

आग्या देकर लकधणी तो महल मांयनै पूगो
खम्मा राम उच्चारी हणुमत काम सांवरो हूगो



वीर बूक ताण केई केवै इया पामरों
जा मरो डुबाय नाक खाय खंजर का मरो
तीर को मुकाबलो ना कर सकैलो काकरो
लक जिसै देस नै जळावै एक बानरो

न वों स र्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान जी द्वारा लंका जलाई जाने का वर्णन है। जनता परेशान होकर रावण से कहती है कि जब राम का एक ही दूत तुम्हारे शूरवीरों के देखते देखते अशोक वन उजाड़ गया, अक्ष को मार गया, तथा लंका जला गया तो जब उनकी सारी सेना आयगी तब तो तुम्हारा पता ही नहीं लगेगा।

न वों स र्ग

केई पूर लपेटै केई मगता ई दे जावै टोरो
सींच सींच घी तैल तमीचर पूंछ मांयनै देय मरोरो
स्याणी बात सुणावै केई दिन रावण रो आयो फोरो
लपक लपक कर लाय लगावै लंका में अजनी रो छोरो

धाय धाय सिलगी धरती आभै में उपड्यो अरड़ाटो
गळी गळी घर घर मे मचियो छोरा छोर्यां रो बरळाटो
पूंछ घुमाय मरै किलकारी गूंजै बाघ जिया घरड़ाटो
लाय लागगी चारू कानी लका माय मच्यो करळाटो

बात करै केई चोवड़ जमिया राजा रावण ओ कई करियो
कोई कहै छेड्यो काळिन्दर भूखो बाघ बाथ में भरियो
यूं गरव्याता बोलै केई एक बचैला ना टाबरियो
बाळ रयो घरबार बापजी बाडो बदकारी वानरियो

वीर चूक ताण केई केवे इयां पामरो
जा मरो डुबाय नाक खाय खजर का मरो
तीर को मुकाबलो ना कर सकेलो कांकरो
लंक जिसै देस नै जळावै रंक बानरो

लंक री गमावै लाज एक जीव नागड़ो
धणी धोरी कोनी जाणै देस साव बापड़ो
सूर सगळा भेळा होय मार काढो आघड़ो
बाघ बेठो ताकतो रै माल खावै गादड़ो

केई इन्नै बातां करै बिन्नै लाय लागगी
इच इंच मांसूं जाणे ज्वालामुखी फाटगी
लाय मिस हाय आज मौत घेरा घालगी
लंक मांय एक बार हाय हाय माचगी

लाय दूणी तीणी भबके ज्यूं ज्यूं चाले बायरो
चौफाळी में बेरो कोनी पड़े बाप माय रो
आभे में अबार लगियो राकसड़ां री हाय रो
लंक जिसै देस नै जळाव रंक बानरो

तिरासी

केई हाट बळे केई बाट बळे केई गूदड़ लिपट्या खाट बळे
केई अकड़ हुया असचूर फिरे ने दारूखोरा लाट बळे
केई आठू पोर ऊमीज्या रै उण मदछकिया रा ठाठ बळे
केई खजर काढ रुखाळ करै पिण रावण आळा पाट बळे

केई एक बळे केई दोय बळे केई भेड़ जियां सो टोळ बळे
केई कोट कमीज समेत बळे केई पूर डोल रा खोल बळे
केई मून हुया चुपचाप बळे केई राफड़ छाती छोल बळे
केई रूप सुहाणा इन्दर सा केई जम जेड़ा बेडोल बळे

कठी अबर अड़ी हवेली बळे कठी नोरा बळे कठी बाड़ा बळे
कठी टापर बळे गरीबा रा कठी लोटां का ताड़ा रा ताड़ा बळे
कठी धान खेत मे हर्यो ही बळे कठी बूंट का बूंट उखाड़ा बळे
कठी थेपड़ घोचा घास बळे कठी ढारै में लक्कड़ फाड़ बळे

कठी भींट बळे कठी छींट बळे कठी रेसम मलमल फाड़ा बळे
कठी राकस जब्बरजग बळे कठी मुच्योड़ा दोनू जबाड़ा बळे
कठी सुन्दर नार घळे ओलै कठी दोनूं ही बोवा उघाड़ा बळे
कठी ओढन साल दुसाल बळे कठी घाघर फाटोड़ा नाड़ा बळे

कठी छोरा बळै कठी छोर्‌यां बळै कठी धाड़ाफाड़ जवान बळै
कठी डेण डोकरी सेंत बळै कठी बड़ा बड़ा बळवान बळै
कठी हाथ बळै कठी टांग बळै कठी होट नाक रू कान बळै
कठी मेल माळिया छान बळै कठी मींदर सांच मकान बळै

छोरै नै गोदी में लियां माय जावै भाग है
आंख्यां आंसू नासां लोही रापां आवै भाग है
इण नै तो बचाय राम म्हारै कुळ री पाग है
लावै जिन्नै सामी आवै आग आग आग है

लाय री लपट्टां जाणै सेस री फुंकार है
रावण री हूणी रै मांगै लंका रो संहार है
लाय कोनी साधारण आ काळ री हुंकार है
टूट पड़िया मारू माण परळै री पुकार है

लाय लाय लाय चारूंमेर लाय लाय है
हाय हाय हाय खाली मूं में हाय हाय है
पूत पीव पिता त्याग आपनैं बचाय है
मरता पड़ता नीठ नाको रावण रानैं पाय है

खमा लंकनाथ ढूंढ हेटी क्यूं झुकायली
बोलोकनी जीभ होटां मांय क्यूं लुकायली
सिया नै चुराय चोखी समझुणी चुकायली
खोजै जियां बानरियै सूं लंक नै फुंकायली

इसै जोर माथै सिया चोर क्यूंकर लावणी
लावणी तो जाणणी ही चार दिन री पावणी
राम नै जे सूंप देता नगरी आ सुहावणी
बळतीकोनी बणतीकोनी विधवा सी विरागणी

बैठा रया सूर बानर बाग नै उजाड़ग्यो
बैठा रया सूर बानर बोल भी सुणायग्यो
बैठा रया सूर बानर छोत सी उतारग्यो
बैठा रया सूर बानर लंक नै जलायग्यो

इसै जोर माथै राड़ रामजी सूं रोपणी
आम रै बगीचै मांय आक बोज तोपणी
लीक नै मिटाय मरजाद कुळ री लोपणी
आपरी बुराई भोळी परजा माथै थोपणी

जिणरो एक दूत सगळै देस नै जळायग्यो
अक्ष मार जोर अपणो आपनै बतायग्यो
लंक में लाखां रो दरड़ो आंख्यां आगै घालग्यो
लुगायां रा काचा गर्भ गर्ज सूं गिरायग्यो

निरचै उणरी सगळी फौज मोत रो सामान है
सीता सूंप सधि करो लका रो सम्मान है
अजै भी तो त्यार वीर वानर हणुमान है
मानो मानो मानो तपसी राम वळवान है

कही रावण-स्रावण सा वरसो वानरियो डूब मरै जळ में
वर गड़ड़ गड़ड़ गरजण लागा वरसण लागा वादळ पळ में
इक नयो अचसो आज लख्यो श्री रामदूत रै तन बळ में
भवकै यूं लपटां लागण सी जद मूसळधार पड़ै झळ में

जद पाणी घृत रो काम करै आगी में क्यूं न उठै भवको
जद आंख दूखणी उघनी रै टाण्यां सूं क्यूं न चलै चवको
जद तैल निवड़्या दिवलै रो वाती रो क्यूं न उठै हवको
जद आंख मदळ ले वर आळा टिकणै मे सात्र समझ ढवको

मन्दोदर यूं बोली रावण जोयनै उदास है
अजैं किसो अब कंत लंक सत्यानास है
माचरी अळै अजारो होरयो विनास है
रामजी रै पास इसा इसा कोडां दास है

रावण कै घमंड री दीवारां सगळ ढायली
मोटा मोटा सूरमां सूं खमा खमा पायली
लंक फूंक रामदूत पूंछ नै बुझायली
रामजी सूं मिलवा ताईं सीताजी री रायली

जीयां में कोई भदरक कोनी प्राण रया है बाकी
भळ वेगी सुध ना लो तो प्रभु खोड़ मिलैली मा की
पाणी बिण ज्यूं मछली तड़पै प्रभु चरणां री प्यासी
इण आशा में जीवै दासी राम कदै तो आसी

दसवों सर्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान जी सीता की अवस्था से राम को परिचित कराते हैं तथा उनके पूछने पर लंका की सारी घटनाएं उन्हें बताते हैं। वे उनको पूरा विश्वास दिलाते हैं कि रावण की सैन्यशक्ति से हमारी ताकत किसी भी प्रकार कम नहीं है।

दसवों सर्ग

झर झर नैण झरत मात री मंदी वाणी
झोकै जेड़ो झील पड़ी पिल्लर कल्याणी

दे चूड़ी सैनाण गळगळी वोली सीता
प्रभु चरणां रै दरस-परस मे दिन है कित्ता

नीठ निसारू रात आत परभात थिखै रो
पळ पळ बीतै बरस जियां हिवहार हिणै रो

रावण रा उकरास रात दिन घेरा घालै
मरणो कोनी हाथ जींवती काया चालै

फिट भो जीणो भळै जगत में जीणो कोनी
म्हारै जेड़ो हीण अेक भी तीणो कोनी

कोनी लागै जीव पलक भी थां बिन सीता
आज भूल भगवान हुया हणुमान नचींता

बीत जयंती बात अजें दिन बीत्या कीत्ता
कई बाणां सू भळै भातड़ा होग्या रीत्ता

कद आसी वा रात के प्रभु चरणां में होसूं
रोसूं सिसक सिसक प्रेम अंसुवन पग धोसूं

हळको हुसी हियो राघ सी जमगी छाती
सूनो हुयो सरीर न लागै ठंडी ताती

दिन आवै और जाय आय और जावै रातां
भूखी तीसी मरूं न कोई बूझै बातां

कइजौ मतना बात प्रभूनै सौगन म्हारी
घणां हुवैला दुखी बिखै पड़िया वनचारी

म्हारै लिखियो भाग पाण वेमाता फोड़ो
जद बोलो थे रेख लेख नै कूरर तोड़ो

जीणै में कोई भदरक कोनी प्राण रया है बाकी
भळ वेगी सुध ना लो तो प्रभु खोड़ मिलैली मांकी

दिन भर कूकै ड़ुसक्यां फाटै कागी ज्यूं कुरळावै
रात बातां नै भूर भूर कर बिललावै बरळावै

पाणी बिण ज्यूं मच्छी तड़पै प्रभु चरणां री प्यासी
इण आसा में जीवै दासी राम कदे तो आसी

सुण सीता री बात नैण आसूं भर जावै
ज्यूं ज्यूं पूंछै राम बियां वे दूणा आवै

कंठ लगाई राम सिया सैनाणी चूड़ी
माथै चाढियो रख हियै चढ आई हूड़ी

होय सचेता राम फेर पूछी हणुमंता
रावण रो बिवहार किसो केड़ी है जनता

जोय राम रो रूख अगेरी बातां दूजी
सांनै सूंदड़ी देय बखेरण मन री सूजी

धाप फळां सूं रूंख उखाड़ रुखाळा मार्‌या
चोट चपेट लपेट पूछ सूं अक्ष विडार्‌या

मा रो पतो विभीषण पेली दे दीनो हो
रावण रै भाई नै अपणो कर लीनो हो

सिय चोरी सूं जनता सगळी बिगड़ी बिगड़ी
पटराणी मंदोदर भी रावण सूं झगड़ी

पिण वो मानै नहीं अेक री घणो हठीलो
जनता धापी जुलम करै वो महा रिसीलो

ग्यान और विग्यान राज री ताकत उण री
आख काढ लै, सामो जोवै हिम्मत किण री

उफ नीं होटां कढै लोग मन मांय मुसीजै
भाई हो या मीत प्रीत नीं कठै पतीजै

भ्रात विभीषण सूं रावण री कदै बणै ना
एक कहै सच बात दूसरो कदै सुणै ना

जोय विभीषण नै लंका में सबसूं स्याणो
जनसेवा अर रामभगति रो देख्यो बाणो

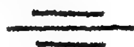
लीनो मीत बणाय न कीनो रंच अवेरो
दुसमण भाई आज आपरो दास घणेरो

सुण सुण बातां राम मोद सूं मनमें मुळकै
हणुमत री करतूत प्रेम सूं गुणगुण पुळकै

मेघनाद जद बांध ले गयो रावण नेड़ो
दी सधि री सीख घाल कर घणो फंफेड़ो

अंग भग कर पूंछ जलाणे री दी आग्या
लंका दई जळाय निसाचर बोकण लाग्या

देख लिया प्रभु घूम घूम लंका रा रसता
रावण री सेना सूं कोनी बानर ससता



ग्यारवों सर्ग

लोथां सूं लोथां लगी पड़ी भोळ्या सूं भोळ्यां भिड़ी पड़ी
ले हाथ घड़ा तरवार जूझ री बिण माथां भी खड़ी खड़ी

माटां री बिरखा हुवै कदी लागै लोही री झड़ी झड़ी
कदी राघ रड़ै कदी धूड़ पड़ै कदी मुड़दा मांडै थड़ी थड़ी

कई भोड़ भटाभट यूं उछळै ज्यूं लागै टोरा जाय दड़ी
बा गिन्द उठी धरती सगळी नदियां लोही री सड़ी सड़ी

मोटां सूं मोटा भूज पड्या छोटा सूं छोटा जूज पड्या
लामा सूं लामा ओछा भी भिड़ आपसरी में गूज पड्या

भूखा बकरां सूं बाघ भिड्या और भिड्या ऊन्दरा मिनकां सूं
तरवार, तीर, फरसा, कटार भिड़ पड्या रूंख रै तिनकां सूं

बोकै राकसड़ा हाय हाय दांतां सूं चीरै घास कढै
जद खुसियां में किलकार मार बानर भालू जै राम रढै

हाथी सूं हाथी उळझ पड्या जद भाकर आळा पड्या टोळ
हर हाक सुणी हणमत री तो आपस में राकस गफागोळ

हो डफाडोळ भिड़ग्या बाथां दांतां सूं आंतां खींच खींच
केई खा भु वाळ फोड्या कुपाळ केई पड्या काळजो पींच पींच

केई खाय गुळेचो गट्ट गिरै केई समदर अन्दर पट्ट परै
केई ऊदर अटकै अम्बर में केई लूम लपेट में लट्ट नरै

केई भट्ट चपेट की फेंट खरै केई मुखसू लोहित स्रोद झरै
केई थूक गिटै केई मांय जरै केई सिसकै आज के काल मरै

कोसां तइ लासां बिछी पड़ी मन रा मन में अरमाण रया
केई अधकचरया अधमरया पड्या केई जै हणुमान उच्चार रया

केई वसक रया केई कसक रया ले सांस उपरला टसक रया
केई धरती अंदर धसक रया केई पाणी पाणी सिसक रया

निनायने

चल्यो पवन री चाल जाय हणुमान हठीलो
त्याग समंदर भाकर तरवर अम्बर लीलो
काम मगन है अेक लगन है जिम्भा राम रटंता
हाय विधाता लखणलाल रो कूकर कस्ट कटंता

बारवों सर्ग

कथा

इस सर्ग में उस समय का वर्णन है जब कि लक्ष्मण के शक्ति लग जाती है और राम बेचैन हो जाते हैं। हनुमान जी सुषेण वैद्य की चालाकी पूर्ण राय से संजीवनी लेने जाते हैं। मार्ग में बाधा डालने के लिए रावण का भेजा हुआ कालनेमि तपस्वी का भेष बना कर बैठ जाता है और माया से एक रमणीय आश्रम बना कर उनको बीच में ही रोकने का प्रयत्न करता है। हनुमान जी को उसके मायाजाल का पता लग जाता है और वे उसे मार कर संजीवनी वाले पहाड़ को उठा लाते हैं।

बारवों सर्ग

जद्यपि कही सुषेण सेण मैं लंक धणी रो
जाण बिखै रै मांय न नटणो काम किणी रो

भळै हुयो रावण रै साथै म्हारी आ गद्दारी
सेवा खातर राम मिलैला मनै कणां बळधारी

पकड़ लखण रो हाथ नाड़ नै जोवण लागो
केण लग्यो हणुमान राम जद रोवण लागो

जद्यपि वैद सुषेण सेण तूं लंक धणी रो
राम न करै भरोसो थां बिण और किणी रो

भागै भाई बंद कबीलै खातर जीवण गाडो
मिनख वही जो दुसमण रै भी आवै दुख में आडो

जुद्धकाळ नै जाण नींद में छानै सै हो आयो
वेगा हटावो भळै अंधेरो जको राम पर छायो
।

अेक लखण बिण निस्चै ही सै लखण निसरग्या
जुद्धकाळ में बिण मार्‌या ही म्हे तो भळै पसरग्या

लोग कहैला भळै लुगाई खातर मार्‌यो भाई
इण चिंता सूं चढवो कोनी रामधणी पर काई

दुख तो इण रो है के प्रभुजी सरण बिभीसण लीनो
ताज लंक रो माथै धर कर राजतिलक कर दीनो

धरती कदे न जायो जासी लखण सरीसो भाई
सै अरमाण धर्‌या रह जासी मिटी नजे अबखाई

मनमें सोची वेद लखण रो फेरूं जीणो माड़ो
रावण रो अब लूंण उजाळूं म्हादूं आंरो आड़ो

ऐड़ी चाल चलूं के कोई भेद न पाणे पावै
दवा बताऊं जकी रात भर आंरै हाथ न आवै

सगतिबाण लग्यो जैरीलो रात विताणी दोरी
सूरउगाळी पेली लागै सरजीवण री गोळी

तो है भळै बचण री आसा बानर जोवण लाग्या
सुण सरजीवण लेण पठायो हणुमत प्रभु री आग्या

चल्यो पवन री चाल जाय हणुमान इठीलो
त्याग समदर भाकर तरवर अवर लीलो

काम मगन है अेक लगन है जिम्भा राम रटंता
हाय विधाता लखण लाल रो कूकर कष्ट कटंता

तेज करी रफ्तार पसीनो झर झर चूवण लागो
काळनेमि रावण रो भेज्यो राह रोकण नै भागो

वन रै अंदर मींदर सुंदर आकर अेक बणायो
वारै भाकर लारै सरवर घणा हबोळा खायो

आम पपीता तरै तरै रा लाग्या रूंख फलता
कोयल सुग्गा सोन चिड़कल्यां पक्षी केल करता

काळनेमि बण तपसी लागो करण भजन भगवंता
संत जाण विसराम पाण करी नमन आय हणुमता

संत लारली कथा राम री सगळी गाय सुणावै
सोच सोच कर बोलै जाणै भेद नहीं खुल पावै

सगति लागी लिछमण रै तूं सरजीवण नै जावै
दिव्यद्रिस्टी सूं दीसै सगळी बात जियां बतळावै

न्हावो धोवो भूख मिटावो फेर कहूंला भावी
काळनेमि यूं हणुमत माथै होवण लागो हावी

भावी रै भटकै में सगळी रात बीतसी थारी
अेक लग्यो भटको सो हिव में ओ कोई मायाचारी

निस्चै रात बितावण खातर इण आ भुरकी राळी
संत भेस मे नीच निसाचर है लकारो जाळी

जद बो देस गगावण लागो कर कर आळपटाळी
रामदूत झट नूव काळ नै खाल फाड़ कर गाळी

छोड खोड नै पड़ी सिधार्यो लीनो भाकर नेड़ो
सगळा रूंख चमकता देख्यो हूयो कबाड़ो केड़ो

सरजीवण री जड़ी पिछाणूं कोनी लागै गेड़ो
आपां तो सरजीवण सेती भाकर आज उखेड़ो

वद आप हो लेसी बूटी टूट्या तार मिलासी
सूर उगाळी सूं पेलां सरजीवण देय जिलासी

सरजीवण रो बळतो भाकर मूळी जियां उपाड्यो
हाथ लेय कर चल्यो सरर सो बाघां जियां दहाड्यो

रातोरात वगै मतवाळो रामधणी रो प्यारो
ओपै हणुमत जाणै अंबर मगळ आळो तारो



चुपचुप सेना त्यार करो थे आसपास री सारी
और इसारो मिलता ही घमसाण मचावो भारी
घेरीज्यो लंका चोतरफी आस बधैली म्हारी
हिम्मतहार हुवैला जिणसूं रावण अत्याचारी
यूं समझा कर भरतलाल नैं कर सुख दुख री वाता
मात भ्रात गुरु और प्रजा री लेकर सारी साता

तेरवों सर्ग

कथा

इस सर्ग में हनुमान जी संजीवनी बूटी लेकर आते समय भरत जी से मिलते हैं और उनको रामजी पर पड़ने वाली विपत्ति की सारी कहानी सुनाते हैं। भरत जी को उनके कुछ भी काम नहीं आने की बात से पछताते देख कर सेना को तैयार रखने का कहते हैं और संकेत मिलते ही लंका पर आक्रमण करने का संदेश देकर विदा हो जाते हैं।

तेरवों सर्ग

रामदूत कर नमन भरत ने जाण राम रो भाई
कही संजीवण लेवण आयो लिछमण रै अबखाई

सगतीबाण लग्यो लंका में मेघनाद रो भारी
सूर उगाळी पाछै कोनी लागै उणरै कारी

लियां गोद मे लाश लखण री रोवै राम डडीकै
वानर दळ पै गाज गिरी सै बैठा बैठा भींकै

सुणी लखण रै अबखाई तो भरतलाल अकुळायो
नसड़ी नीची राळी आंसू आंख्यां सूं ढळकायो

बोल्यो इण कुबदी रै कारण पड्या राम ने फोड़ा
मात केकई करी कुचरणी अड्या पंथ में रोड़ा

क्यूं तो राम निसरता बन में क्यूं मां सिया चुराती
क्यूं लिछमण रै लगती सगती बैरण मुरछा आती

क्यांनै उरमिल और मांडवी पड़ी पड़ी पछताती
क्यूं मैं तपसी बणतो नगरी राम बिना अकुळाती

पिण न मानखो मिटा सकै जो खिची भाग में रेखा
धीर वीर ग्यानी अर मानी इण रै आगै लेखा

बोल्यो हणुमत करो न चिन्ता भगवत री है मरजी
पर उपकारी अमर रवैला नास हुवै खुदगरजी

फरजी बात सुणाऊ कूकर, कूकर देऊं झांसो
रावण री सेना रै सामै पलट रयो है पासो

राम घणां दुखियारा पेलां छळ सूं गई लुगाई
और लुगाई खातर चाल्यो जग सूं लिछमण भाई

जुद्ध जितैला तो भी दुनियां देसी उणनै तानो
सीता सारू मरा दियो लिछमण सो भाई छानो

ौर चीज सै मिलै जगत में मिलज्या पूत लुगाई
म विकळ यूं मिलै नहीं जग में मां जायो भाई

को विलखती छोड़ महल में उरमिल बरगी नारी
लकल चीर लपेट राम रै साथ हूयो बनचारी

ाम गमाय भ्रात लिछमण नै आय अयोध्या कूंकर
गौर सुमित्रा माता नै वै मूं दिखळावै कूंकर

एडगाळी पेल्यांई पोंचाणी है या बूंटी
ाणसूं वैद जोड़दे नाड़ी लखणलाल री टूटी

ा बण्यो कूटेम मिलण रो कुदरत री क्या लीला
ै है सच होय गरीबी में ही आटा गीला

ीयधा रया जद्दो तो ओजूं आय मिलांला
लिछमण राम सहित आ ह्विव री बात करांला

मैं अधम राम रै कुछ भी काम न आयो
वे जुद्ध मांयने मैं वप मैं विलमायो

सीता गमगी लिछमण मूर्च्छित जुद्ध लंक में चालै
खुद री सेना ठाली, बानर मदद करण नै हालै

बिरथा जूण गमाऊ बैठो कूंकर जिवड़ो लागै
एक पलक भी थमूं नहीं चालूंला थांरै सागै

तीर कबाण हाथ में लीना सस्त्र पलारण लागै
चालण खातर बेगो सो सामान सुधारण लागै

हणुमत बोल्यो बिण कारण ही क्यूं खाणी बरणी
बानर दळ रै साथ उतरसी राम विपद री घी

चुप चुप सेना त्यार करो थे आसपास री री
और इसारो मिलतां ही घमसाण मचावो री

घेरीज्यो लंका चोतरफी आस बंधैली हारी
हिम्मतदार हुवैलो जिणसूं रावण अत्याचारी

यूं समझा कर भरतलाल नै कर सुख दुखो बातां
मात भ्रात गुरु और प्रजा रो लेकर सा साथां

श्री हणुमान चल्यो मतवाळो पुळक मार किलकारी
सूर उगाळो सूं पेल्यांई जा पहुंच्यो सुखकारी



चवदवों सर्ग

आज अवध री राजसभा में सबनै विदा मिलैली
रामधणी री करी चाकरी निस्चै आज फळैली

भगत विभीसण अंगद सुग्रीव सबनै मिळी विदाई
रामदूत श्री पवनपूत हणुमत री बारी आई

रामधणी हस काढ गळै सूं दी मोत्यां री माळा
रामदूत रै रूं रूं लाग्या घणां मोकळा जाळा

धणी न जाणी प्रीत कास में भळै चाकरी चूको
धन रो भूको दास नहीं ओ भाव भगति रो भूको

कास रामजी लेय परीच्छा काम क्रोध मद माया
हणुमत मेरा भगत न इणमें पड़ कर तो भरमाया

हिय में संसो आंख्यां आगै पळ भर धुंधी आई
अेकरखी माळा नै जोवै अेकरसी रघुराई

संसो हटा तुरत दे झटको हणुमत माळा तोड़ै
मोटै सी भाटै सूं मिणियां अेक अेक कर फोड़ै

ज्यूं कोई गमगी चीज इयां घो किचरा में कुछ टोवै
फोड़ फटाफट मिणियां भीतर वेगो वेगो जोवै

कही लखण लख ढेरी माळा मूंधी मोत्यां आळी
तूं पागल बजरंगी छोड़ै बाण न वानर आळी

मिणियां फोड़ै आंख्यां फाड़ै यो कांई काम कमायो
इण में तूं कांई जोवै बीरा ज्यूं कोई राज गमायो

वानर भालू भलै कहो चायै पागल या पड़खाऊ
माळ सट्टे सियाराम ने घोलो कियां गमाऊं

इण मिणियां रै मांय बिराजै रामधणी या कोनी
फोड़ूं जिणसें दीसै कोनी माता सिया सलोनी

तूं बजरंगी साव अनाड़ी पत्थर में प्रभु र
परतक राम बिराजै सामैं क्यूं काया नै र

कंकर काया मिणियां में कंई सीताराम मिलै
कदी काठ में कमल चमेली फूल गुलाब खिलै

जद मानूं तूं सभा मांयनै चीरै तेरी छा
सियाराम री फेर दिखावै जोड़ी आ मुसक

सुण हणुमान फेंक दी माळा नैणां नीर बव
राम राखलै काया प्राण गमासी अंजनी ज

राम नांव बिण जियो न जीसूं रामोराम उच्च
आठूं पोर हियै बिच भाई राम राम रटवो

राम रमै म्हारी रुं रुं में राम बिना मैं सू
राम नांव नै सुण्यां वधै बळ म्हारो दूणो दू

सिया राम मय जाग रया गिगनार समदर घ
जीव जीव में जोत राम री जाग रही है जग

भव सागर सूं ज्याज राम री निश्चै पार लगावै
पापी मांय पड्या बरळावै निश्चै गोता खावै

आ जिनगानी रामचरण में अरपण सदा रहैला
रामदूत पदळै में प्रभु सूं कुछ भी नहीं चहैला

राम राम कह अपणी छाती नख सूं इयां बिडारी
ज्यूं अंबर मे चीर काळजो चमकै बीज घटा री

राम लगायो कंठ प्रेम सूं भरगी छाती
चुप्पी च्यारूंमेर न मुख सूं बोली आती

राम कही धन मात अजनी जिण ते जायो
च्यारूं जुग में इसो मिनख धरती ना पायो

थारे नू हणुमान राम में घणो सवायो
राम कथा पर सब जुग में तूं रहसी छायो

रामदूत

राम नांव सूं जीवण अपणो सफल बणायो
त्रेता रो इतिहास पवनसुत नांव गिणायो

